44 वर्ष | एकादश अंक | जून 2022

524 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

इस अंक में...

7 सम्पादकीय

9 राष्ट्रीय घटनाक्रम

13 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम

20 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य

34 नवीनतम सामान्य ज्ञान

42 राज्य समाचार

44 खेलकूद

49 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

फोकस

51 (1) अटल न्यू इंडिया चैलेंज 2·0 (एएनआईसी 2·0)

53 (2) एक साथ दो डिग्रियाँ हासिल करने का विकल्प : भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली में क्रांतिकारी पहल

56 (3) स्थायी जमा सुविधा : मौद्रिक नीति का एक प्रभावी एवं नवीनतम उपकरण

अनुप्रेरक युवा प्रतिभा

57 **शत्रुध्न कुमार मंडल**
65वीं बिहार सिविल सेवा परीक्षा में चयनित

विविधा

61 स्मरणीय तथ्य

63 विश्व परिदृश्य

68 ऐतिहासिक स्थल एवं ऐतिहासिक व्यक्तित्व

72 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं

लेख

78 **बैंकिंग लेख**—विकासमान भारतीय बैंकिंग प्रणाली : स्वरूप और सम्भावनाएं

80 **अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध लेख**—18वाँ आसियान-भारत एवं पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन

83 **ऐतिहासिक लेख**—सल्तनत कालीन स्थापत्य कला

87 **सामयिक लेख**—रूस-यूक्रेन युद्ध और बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था

89 **खाद्य अपव्यय लेख**—खाद्य एवं अपशिष्ट प्रबन्धन

92 **शिक्षा लेख**—महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा की धारणा और इसकी समसामयिक प्रासंगिकता

95 **ऊर्जा लेख**—राजस्थान में अक्षय ऊर्जा उत्पादन : विकास और ब्यूह रचना

98 **बीजोपचार लेख**—कृषि में बीज उपचार की उपयोगिता

101 **अध्यात्मिक लेख**—ऐश्वर्य और सद्गुण से जीवन में सफलता का रास्ता खुलता है

102 **चिकित्सीय लेख**—औषधीय महत्व के पौधे

104 **कृषि लेख**—लवणीय व क्षारीय भूमियों का सुधार एवं प्रबंधन

107 सार संग्रह

मॉडल हल (वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान)

111 आगामी सिविल सेवा प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

119 आगामी उत्तर प्रदेश सिविल सेवा प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

153 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता

154 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न

हल प्रश्न-पत्र

130 एस.एस.सी. संयुक्त स्नातक स्तरीय (प्रथम चरण) परीक्षा, 2020

138 बिहार सब-इंस्पेक्टर पुलिस (प्रा.) परीक्षा, 2021

143 दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड टी.जी.टी. परीक्षा, 2021

ऐच्छिक विषय

157 **शारीरिक शिक्षा**—उत्तर प्रदेश प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयन परीक्षा, 2021

ज्ञानार्जन के नवीन क्षितिज

164 **वर्षांत समीक्षा 2021** : इलेक्ट्रोनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय

171 क्या आप जानते हैं ?

172 अपना ज्ञान बढ़ाइए

श्रेष्ठतर प्रतिभागी

173 **प्रथम पुरस्कृत निबन्ध**—ऑनलाइन पढ़ाई में पिछड़ते ग्रामीण विद्यार्थी

175 **निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक**—513 का परिणाम

176 **सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक 208**

178 रोजगार समाचार

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

सम्पादकीय

अमावस में पूनम के बीज बोइए

"It is better to light a candle than curse the darkness."

— Chinese Proverb

बिजली चली जाने पर अँधेरा हो जाता है. अँधेरा होते ही अनेक कठिनाइयाँ होने लगती हैं—सब काम-काज रुक जाते हैं. ऐसी स्थिति उत्पन्न होते ही हम बिजलीघर वालों को बुरा-भला कहने लगते हैं—यहाँ तक शासन तन्त्र को भी कोसने लगते हैं, आदि हम अँधेरे से उत्पन्न विवशता को लक्ष्य करके अपना क्षोभ व्यक्त करने लगते हैं, परन्तु ऐसा करने से हमारी समस्याओं का समाधान नहीं होता है न हम किसी वस्तु को देख पाते हैं और न अपना कोई काम ही कर पाते हैं. चैन तब मिलता है जब हम, अथवा कोई अन्य व्यक्ति मोमबत्ती जला देता है. मोमबत्ती का प्रकाश होते ही, वातावरण हल्का हो जाता है और हमारी समस्याएं कम हो जाती हैं, तब क्या आप इस कथन से सहमत होंगे कि अँधेरे को हजार बार बुरा कहने की अपेक्षा एक मोमबत्ती जला देना कहीं अधिक अच्छा है ?

जीवन में अंधकार के अनेक अवसर आते हैं—ये अवसर लाक्षणिक रूप में भी उपस्थित होते हैं—यानी कुछ अवसर ऐसे होते हैं जब हम किकर्त्तव्यविमूढ़ता की स्थिति का अनुभव करने लगते हैं. समझ में नहीं आता है कि क्या करें, क्या न करें ? किधर जाएं ? किसके पास जाएं, आदि ? ऐसे अवसरों पर हमारा विवेक हमारी सहायता करता है. वह प्रकाश के समान हमें रास्ता दिखा देता है और हम अपना अगला कदम बढ़ाने की दिशा का निर्धारण कर लेते हैं.

अंधकार का समाधान प्रकाश है, न कि क्रोध आक्रोश अथावा क्षोभ प्रकट करना. अंधकार होने पर प्रकाश अपरिहार्य है. जब तक अंधकार रहेगा, इस निष्क्रिय बने रहेंगे. निष्क्रियता मृत्यु है—सक्रियता जीवन है. आर्ष ऋषि अमृतत्व प्राप्त करने के लिए यही प्रार्थना करते थे—अंधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाइए कवि की वाणी कितनी सार्थक है—मंजूर है चारों ओर अँधेरा है, पर चिराग जलाना कब मना है ? अतएव हमारा कर्तव्य बनता है कि हम अंधकार का अवसर होने पर शिकवा-शिकायत करने की बजाए शिकवा-शिकायत के कारण को दूर करने के प्रति प्रयत्नशील बनें.

रूस में जन्मी तपस्विनी मैडम हैलेना पैट्रोविना ब्लैवैट्स्की ने इस सन्दर्भ में कहा है—शिकवा-शिकायत प्रकृति एवं प्रगति के नियम के विरुद्ध बगावत करने के समान है. हम स्मरण रखें कि कर्तव्य पालन करने वाला व्यक्ति स्वयंमेव उचित मार्ग का वरण करता है और वह स्वयं भी वरेण्य बन जाता है. ऐसा करने वाला व्यक्ति स्वयं तो लाभान्वित होता ही है, वह अन्य व्यक्तियों को भी लाभान्वित कर देता है. एक अंधा आदमी अँधेरी रात में सड़क पर जा रहा था. उसके हाथ में लालटेन देखकर एक नटखट बालक ने उससे प्रश्न कर दिया—बाबा जब तुम्हें दिखाई नहीं देता है, तब हाथ में यह लालटेन क्यों लटका रखी है ? ''बेटा अँधेरे में प्रकाश करना हमारा कर्तव्य है. कर्तव्य-पालन केवल स्वार्थवश ही नहीं किया जाता है. अन्य लोग तो इस प्रकाश द्वारा लाभान्वित हो सकेंगे'' अंधे का विवेक रूपी प्रकाश भरा उत्तर था. अंधकार के निवारण का प्रयत्न कितना आत्मविश्वास एवं संतोष प्रदान करता है ?

●●●